Dr. Ritu Ranjan
H.D. Jain College (Ara)
Deptt of History
M.A Semester - IV
paper - 3
Topic - Sindh par Arab Ka Aakraman Ka Karan. - I

⇒ सिन्ध पर अरबों के आक्रमण की सफलता के क्या कारण थे विवेचना करें।

सातवीं शताब्दी के महान विजय अभियान से प्रेरित होकर अरबियों की ललचायी आँखें भारतीय सीमा पर पड़ी। उन्होंने जल एवं थल दोनों मार्गों का उपयोग करते हुए भारत के अनेक भागों लोगों पर 712 ई० तक उन्हें कोई महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई। सिन्ध पर अरबों के आक्रमण के पीछे छिपे कारणों के विषय में विद्वानों का मानना है कि ईराक का शासक अल हज्जाज भारत की सम्पन्नता के कारण उसे जीत कर समृद्ध बनना चाहता था। दूसरे कारण के रूप में माना जाता है कि अरबों के कुछ जहाज जिन्हें सिन्ध के देवल बन्दरगाह पर कुछ सामग्री लुटेरों ने लूट लिया था, के बदले में खलीफा ने सिन्ध के राजा दाहिर से जुर्माने की माँग की। बदले में दाहिर ने असमर्थता जताते हुए कहा कि उसका उन डाकुओं पर कोई नियंत्रण नहीं है।

हज्जाज ने क्रुद्ध होकर सिन्ध पर आक्रमण करने का निश्चय किया। हज्जाज ने उबैदुल्ला के नेतृत्व में एक सेना सिन्ध पर आक्रमण करने के लिए भेजा। लेकिन उबैदुल्ला युद्ध में पराजित हो गया। दूसरा आक्रमण बुदैल के नेतृत्व में सिन्ध पर किया गया। बुदैल भी युद्ध में मारा गया। इसके क्रम में हज्जाज ने आक्रमण करावा दो बार की पराजय एवं अपमान से क्षुब्ध होकर हज्जाज ने अपने चचेरे भाई और दामाद मुहम्मद-बिन-कासिम को सिन्ध पर आक्रमण करने के लिए भेजा। मुहम्मद-बिन-कासिम ने 17 वर्ष की अवस्था में सिंध के अभियान का सफल नेतृत्व किया। और उसने सफलता हासिल हुआ।

पर 715 ई० में हज्जाज की और 715 ई० में खलीफा की मृत्यु के उपरान्त मुहम्मद बिन कासिम को वापस बुला लिया गया। अरब की राजनैतिक स्थिति सामान्य न होने के कारण दाहिर ने अपने पुत्र जयसिंह को ब्राह्मणवाद पर पुनः कब्जा करने के लिए भेजा पर सिंध के राज्यपाल जुनैद ने भारत के आन्तरिक भागों को जीतने हेतु सेनाएं भेजी पर प्रतिहार, पुलकेशिन एवं यशोवर्मन (चालुक्य) ने उसे वापस खदेड़ दिया। इस प्रकार अरबियों

का शासन भारत में सिंध प्रांत तक सिमट कर रह गया। अन्त में उन्हें सिंध को भी छोड़ देना पड़ा। लेकिन हाँ भारत के भावी आक्रमणकारियों को इस आक्रमण द्वारा कुछ प्रोत्साहन अवश्य प्राप्त हुआ।

मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सि[illegible] विजय करने तथा दाहिर की पराजय के पीछे कई कारणों का योगदान था।

आपसी मतभेद

सर्वप्रथम सिन्ध भारत का समृद्धशाली राज्य था। यहाँ की जनता विभिन्न वर्गों एवं संप्रदायों में बँटी हुई थी। सभी एक दूसरे के विरोधी थे। वे एक दूसरे को ऊँच-नीच की भावना से देखते थे। सामाजिक भिन्नता एवं धार्मिक असन्तोष का लाभ शत्रुपक्ष को मिला। दाहिर खुद ब्राह्मण था। समाज में निम्नवर्गी दाहिर के विरोधी थे और आक्रमण के समय वे शत्रुओं को सहायता देकर उनकी विजय का मार्ग सरल बना दियी।

जनसाधारण की उदासीनता

ब्राह्मण वंश की नीति से बौद्ध एवं जाट असन्तुष्ट थे। दाहिर जाटों को शस्त्र रखने व घोड़े पर चढ़ने की आज्ञा नहीं देता था। राजा और सामन्त दोनों इन लोगों को हेय दृष्टि से देखते थे। जिस कारण युद्ध में सूबेदार बौद्ध तथा जाटों का समर्थन दाहिर को नहीं मिला और वे सभी शत्रुओं को उपयोगी सूचना देने लगे। यहाँ तक की उन्होंने अरबों को सैनिक सहायता दी। इस प्रकार शासन के प्रति जनसाधारण में व्याप्त उदासीनता और उनके बीच देशद्रोह की प्रवृत्ति के कारण सिन्ध पर अरबों की विजय हुयी।

अर्थाभाव

सिन्ध आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न देश नहीं विदेशी व्यापार आय का एकमात्र लाभकारी साधन था।

आर्थिक विपन्नता के कारण सिन्ध में शक्तिशाली स्थायी सेना रखने का खर्च पूरा नहीं हो सकता था। दूसरी ओर अरबों के पास एक स्थायी शक्तिशाली सेना थी जो उन्हें धन से पर्याप्त साधन उपलब्ध थे। आर्थिक कारण सिन्ध वालों की पराजय का एक मुख्य कारण बन गया।

भारतीय शासकों की उदासीनता :- सिन्ध भारत से एक अलग प्रांत बन गया था। जब सिन्ध पर अरबों ने आक्रमण किया तो उसकी प्रतिक्रिया भारत के अन्य राजाओं में नहीं दिखाई पड़ी। एक तो भारत में उस समय कोई शक्तिशाली केन्द्रीय साम्राज्य नहीं था। ऊपर से छोटे - 2 राज्य विभक्त होने के कारण स्वार्थ से परिपूर्ण था। यदि अगर कोई राज्य पराजय की ओर अग्रसर होता तो भी दूसरे पर इसका प्रभाव नहीं पड़ता था। इस कारण दाहिर को अपनी सीमित साधनों के सहारे अरबवालों से संघर्ष करना पड़ा। अतः भारतीय शासकों की उदासीनता दाहिर की पराजय का कारण बन गयी।

अल्पसंख्यक सैनिक :- अरबों की सेना बहुसंख्यक एवं अस्त्र-शस्त्र से परिपूर्ण थी। देवल के युद्ध में सिन्ध और अरबों की सेना का अनुपात एक और छह का था। निरंतर विजय प्राप्त करने के कारण सेना का उत्साह बढ़ा हुआ था। दाहिर के पास विचारशील व दूरदर्शी की कमी थी और अपनी जलसेना को मजबूत करने का उसने प्रयत्न नहीं किया। पराजय के दो मुख्य कारण थे → सर्वप्रथम सिन्ध के सैनिकों की संख्या अल्प थी तथा वे युद्ध के लिए पूर्णतया सुसज्जित नहीं थे। दूसरा कारण योग्य नेतृत्व का अभाव था।

धार्मिक सहिष्णुता :- अरबों के महत्व गया धार्मिक उत्साह था। वे इस्लाम धर्म के नाम पर काफीरों एवं मूर्ति-पूजकों की